Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज़ाद हिन्दुस्तान में क़ैद हूँ

Prose

डॉ. इंदु पांडेय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. इंदु पांडेय अपनी कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय व मानवीय संवेदनाओं को भरपूर अभिव्यक्ति देती है। जीवन के यथार्थ में डूबे स्वरों की झंकार भी इनमें व्याप्त है। 'आज़ाद भारत में क़ैद हूँ' की कविताएँ सरल व प्रभावकारी है। मुक्त छंद में होते हुए भी इनमें रवानगी और काव्यात्मकता है, जो मन पर गहरा असर छोड़ती है।

- शरदेन्दु शर्मा

'आज़ाद भारत में क़ैद हूँ' नामक संग्रह में प्रस्तुत कविताएँ कवयित्री इंदु पांडेय के भावुक मन की सरल व सहज अभिव्यक्ति हैं। इन्हें पढ़ते हुए जीवन के अनेक प्रसंगों व परिस्थितियों की बहुरंगी झाँकी सामने आती है। कविताओं के विषय भी अनेक हैं, जो मन की पर्तों को झकझोरते हैं। इंदु जी की कविताएँ अपने कलेवर के कारण पठनीय व रोचक हैं।

- असीम शुक्ल

डॉ. इंदु पांडेय की कविता में परम्परा का निर्वाह भले ही न हो पर इनमें आधुनिक समाज को अनदेखा बिल्कुल नहीं किया गया है। कविताओं की विषयवस्तु प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य के भावबोध से भरी होने के कारण ये मानव मन के करीब पहुँच कर उससे अपना रिश्ता जोड़ लेती हैं। इनमें उदात्त कल्पना व लोकजीवन की झलक भी है और जीवन के संघर्ष के चित्र भी। कहीं-कहीं आध्यात्मिक बोध और दार्शनिकता भी इनमें समायी है। ये साधारण-सी दीखती हैं- लेकिन इनका हृदय पर असर असाधारण है।

- डॉ. श्याम निर्मम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महान कवि
डॉ. अग्निशेखर
जी को सप्रेम
भेंट

उदय

9/1/2012

9881057369

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4258
Dated 13.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज़ाद हिन्दुस्तान में क़ैद हूँ

डॉ. इंदु पांडेय

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

parag books

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 81-87771-41-0

०

प्रकाशक

पराग बुक्स

प्रधान कार्यालय :

ई-28, लाजपत नगर,

साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद-201005

फोन : 0120-4112210, 2630699, 2635277

09811279368, 09911179368, 09911379368

e-mail : paragbooks@gmail.com

दिल्ली कार्यालय :

बी-73, सूरजमल विहार, दिल्ली-92

०

मूल्य : एक सौ बीस रुपये

प्रथम संस्करण : 2010

कॉपीराइट : डॉ. इंदु पांडेय

आवरण : अभिषेक

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट, दिल्ली-32

०

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

समर्पण

वह समय का तटस्थ किनारा
जिसने हजारों लहरों को उठते-गिरते देखा
लेकिन अपनी मर्यादा में
कभी मलाल नहीं आने दिया
के समान
मेरे पिताश्री
श्री रामजी तिवारी
को
यह काव्य पुस्तक
समर्पित

- डॉ. इंदु पांडेय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोहे की जंजीर

आपके जीवन में कभी ऐसा अवसर आया है, जब आपको किसी ने सम्पूर्ण स्वतंत्रता दे दी हो और आप हैं कि अपने आपको किसी लोहे की जंजीर से जकड़ा हुआ महसूस कर रहे हैं? मेरे साथ कई बार ऐसा हुआ है और उसी अवस्था में कुछ पंक्तियाँ अपने आपको सफाई देने वाले संवाद के रूप में उभर आती हैं, जिनमें कहीं समाज व्यवस्था की लड़ाई होती है, तो कहीं स्वयं अपनी सोच को कार्यान्वित न करने का खेद होता है।

इन कविताओं के प्रकाशन के लिए मैं 'पराग बुक्स' के निदेशक प्रिय पराग कौशिक की आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे इस संग्रह को आप सब तक पहुँचाया। साथ ही आभारी हूँ प्रख्यात कवि शरदेन्दु शर्मा, जाने-माने पत्रकार असीम शुक्ल और वरिष्ठ नवगीतकार और पत्रकार डॉ. श्याम निर्मम की, जिन्होंने मेरे इस संग्रह पर अपने विचार देकर मुझे उपकृत किया।

किसी भी रचना की सार्थकता उसके पाठकों के विचारों में छिपी होती है। आप सब मेरी इन कविताओं को पढ़कर निश्चित ही अपने विचारों से मुझे अवगत कराकर मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

- डॉ. इंदु पांडेय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

शारदा स्तुति : 7

पथिक : 8
ख़त 14/11/87 का : 11
ललकार : 14
इंदिरा भी एक नारी थी..... : 16
लिस्ट : 19
उस दिन : 22
अक्सर ऐसा क्यो होता है? : 25
कमरे केवल चार शहर में : 27
क्यों? : 30
हे कविवर! : 32
प्रियतम : 34
हम ईश-पुत्र हैं : 36
आज : 38
मुखौटा : 41
जीवन : 42
हे प्रभु! : 43
सुन री माई : 44
मैं दुख से नहीं घबराती : 47
यह नहीं हमारी हार : 49
तुम और मैं : 51
पहले पहल : 52
स्वर्ग मही पर लाना है : 54
अरे काल : 56
58 : माँ शारदा
60 : मैं आज़ाद भारत में कैद हूँ
62 : देशभक्ति
67 : माँ भारती पुकारती
69 : जिस देश को अपना कहते हो
71 : किसान
72 : मन
74 : उधारी
75 : एक कवि औ' प्रजातंत्र
79 : बेटी
81 : तीस जनवरी, दो अक्टूबर
84 : स्मृति
86 : कवि सम्मेलन
89 : भारत का लाल
91 : मेरी कविता
93 : ये कैसी हरियाली है?
94 : हे भगवान
96 : हम विश्व विजयी
98 : क्या कहती हो
101 : कली
102 : काश ....!
103 : ऐसी क्रूर क्रूरता
104 : मानव आँसू पर इतराता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शारदा स्तुति

नमः विमलाये
नमः विमलाये
हंसवाहिनी
कमलधारिणी
वीणावादिनी
माँ विमले!
जिस पर तू अनुकम्पा डाले-
वो शारदासुत कहलावे
तेरे बिना माँ
मूक संसार
तू ही है जगती का आधार
तू शब्द देवी है
हर शब्द तेरा अवर्णित है
अनुपम ये रूप तेरा
मुझे दे दे माँ
अपनी थोड़ी-सी आभा
जिससे चमकते अरुण
इंदु तारा
तेरी शरण आयी है एक बाला
उसे भेट कर दे माँ
शब्दों की माला
तेरे ही गुण गायेगी
जब लौ रहे उसकी साँसें
नमः विमलाये!
नमः विमलाये!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पथिक

देश ढूँढने निकला हूँ
नाम हिन्दुस्तान है
भूला पथिक राह खड़ा हूँ
कोई हाथ बढ़ा दो जी ....।

रूप क्या है?
रंग भला क्या?
क्या उसकी पहचान है?

खुलकर तनिक
बता दो पथिक!

हाथ हमारा साथ है.......
हिम का मुकुट जड़ा है
उसको गंगा चरण परवारे है
तीन-रंग लहराता
झंडा
उसकी अपनी पहचान है...........।

टूटा-फूटा
मुकुट जड़ा है
मैला नीर
परवारे हैं
झंडे पर दाग
अनेक लगे हैं
क्या वही तुम्हारा
देश है?

नहीं-नहीं
हो सकता नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वह नहीं
हमारा देश है..........।

कश्मीरी तिलक
विराजे उसको
पहने नीली करधनी
भिन्न धर्म का
भिन्न जाति का
एक अकेला देश है...........।

जो आता है
चकित हो जाता
यह बड़ी हमारी शान है।

घायल ललाट
दिखे है जिसका
आहत-जन हैं भरे जहाँ
भूख गरीबी का नम्बर-वन
कहलाता पिछड़ा देश है
क्या कहते हो
पथिक भला
क्या वही तुम्हारा देश है ....?

नहीं-नहीं हो सकता नहीं
वह नहीं हमारा देश है.......।

वेद-पुराणों से भरा
जहाँ रहते लाखों देव हैं
मंदिर-मस्जिद मिलकर रहते
जहाँ भेद न गीता-कुरान है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश-प्रेम धरम है जहाँ पै
वह मेरा देश महान है
वेद-कुरान को भिड़ते देखा
मंदिर मस्जिद
टकराते हैं........
तू-तू मैं-मैं में पड़कर
सब हुए लहुलुहान हैं.........।

क्या कहते हो
पथिक भला
क्या वही तुम्हारा देश है........,
नहीं-नहीं
हो सकता नहीं
वह नहीं हमारा देश है........।

पथिक थका
और गया बैठ
लगा सोचने
रख सिर पै हाथ
लक्षण तो
सच कहते लोग
पर रूप अलग बतलाते हैं
ऐसा तो नहीं कि बदला
मेरा हिन्दुस्तान है
देश ढूँढने .....
नाम हिन्दुस्तान .....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़त 14/11/87 का

माली ने ख़त लिखा है
गुलशन के नाम
आइए ज़रा पढ़ते हैं
क्या भेजा है पैगाम
प्रिय गुलशन,
यशस्वी भव
तुम विश्व गौरव बनो
सदा रहे जग में
तुम्हारी शान।

माली ने कहा-
आइए........
गुलशन,
गुलदाउदी कैसी है?
क्या है उसका हाल?
क्या रोज सवेरे
जूही उठती है?
जानता हूँ-
थक तो जाती होगी
रोज सवेरे
मलयागिरि से मुस्कान जो ढोती है........।

देखना,
कहीं, गर वे अलसा जाए
मत पड़ने देना उस पर फटकार
नाजुक है
छोटी-छोटी बातों पर
हो जाती है उदास।
माली- आइए!
देखना,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

यदि चम्पा और चमेली
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की हो जाए तकरार
चतुराई से निपटाना
बढ़ने ना पाये
लम्बा फसाद
माली-
आइए!

मैं निश्चिंत हूँ
सूरजमुखी को लेकर
पर कुमुदनी?
उसकी बड़ी चिन्ता रहती है
उसका रखना विशेष ख्याल
माली-
आइए!

आते हुए देखा था
मेड़ पर दूब दुबकी थी
मुँह से बोली नहीं
आँखों से सिसकी थी
धतूरे और कनेर को
कह देना
दूब को कोई
करे ना परेशान
माली-
आइए!

मैं जानता हूँ
वे नादान हैं
नहीं जानते हैं
आपस में लड़ने से
मिट जाएगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलशन की शान
माली-
आइए!

अंत में
बस यही कहना है-
गर शुरू हुआ
अपनी-अपनी ढफली
और अपना-अपना राग
बस टुकड़ों में मिट जायेगा
यह सुन्दर फूलिस्तान
गुलशन,
देह से दूर हूँ
इसके ख़ातिर मजबूर हूँ
पर-
हाथ लगा कर देख लो
तुम सबकी धड़कन में
मैं-
आज भी मौजूद हूँ ....।

गुलशन,
आज मेरे जन्म दिवस पर
मत बाँटो मिठाई
हर बच्चे के हाथ
दे दो एक-एक ख़त
जो मैंने-
तुमसे है लिखवाई
शायद मिल जाएगा
हम सबको अपना मुकाम ....।
माली-
आइए.......।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ललकार

उठ जाओ फुफकार के!

ना सोओ चादर तान के
दुश्मन घुस आया है घर में!

गरजो शेर दहाड़ के
उठ जाओ.....।
देखो-
भारतमाता पूछे
खड़ी तुम्हारे द्वार पर
क्या पुरखो का पौरुष
करता कोई फरियाद नहीं?
या-
मैं जानू कि तुम
अपने पुरखों की
औलाद नहीं ....।

वे स्वर्ग बचाने जाते थे
सुर-पुर से देव बुलाते थे
मैं खंडित होकर बैठी हूँ
तुम महिमा मंडित कहलाते
जाओ-
शिवा की तलवार निकालो
ले आओ गाँधी की लाठी
जाकर बतला दो उनको
तुम किसके वंशज कहलाते हो
हर एक
सिपाही बन जाओ
दुश्मन को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुट्ठी में मसल जाओ
माँ का आँचल
छूने वालों पर
आफत बन करके
बरस जाओ!

जाकर बतला दो...
हर एक बहादुर,
लाल यहाँ
हम जुट होकर देते हैं
हर कामों को अंजाम यहाँ
गर नहीं कर सके
यह तो ....
ला दो मुझको
थोड़ा-सा गंगाजल
तुम जीवित
मुर्दों की कर दूँगी
अंत्येष्टि
फिर केवल दुख
मेरा एक रहेगा
मैं मुर्दे औलाद जनी!

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंदिरा भी एक नारी थी.....

धरती डोली, डोला गगन
सारी दिशाएँ गूँज उठी
सूखे तरु में कोमल पँखुरियाँ
खिल आयी मुरझाई कलियाँ
वे जिस दिन धरती पै आयी थीं
इंदिरा........।

नारी तो पहले भी देखी
पर वह तो बहुत निराली थीं
देवी भी नहीं, दुर्गा भी नहीं
पर कोई तो अवतारी थीं
नारी शक्ति की सीमा को असीमित
करने आयी थीं
इंदिरा ....।

होता बेटा बड़ा नहीं
ना बेटी छोटी होती है
गर पिता मिले जवाहर तो
हर बेटी इंदिरा बनती है
बेटे-बेटी का भेद मिटाने वह
इस जग में आयी थी
इंदिरा ....।

नेहरू की संतान अकेली
माँ की बहुत चहेती थी
ऐसा लगता था मानों
आनन्द भवन की मोती थी
आनन्द भवन को महानंद से वह
मिलवाने आयी थी
इंदिरा .....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजनीति में जन्म हुआ था
राजनीति में बड़ी हुई थीं
अवयव की दृढ़ मासपेशियाँ
राजनीति से जड़ी हुई थीं
राजनीति में दक्ष है नारी यह दिखलाने
आयी थीं.....
इंदिरा ....।

वीर सेनानी सारे जग के
उनके बड़े सनेही थे
भारत का हर बच्चा युवक
उनके ज्ञान के प्रेमी थे
अपने गुण व ज्ञान सभी से
जग मोहने आयी थीं
इंदिरा ......।

चमक गया भारत का भाग्य
जब वह हुई सयानी थीं
राजनीति में रुचि दिखलाई
नेहरू जी की परम्परा निभायी
पितृ ज्ञान को पुत्री बन
विस्तार कराने आयी थीं
इंदिरा ....।

बेटी का बंधन बाँधे था
पत्नी बनना स्वीकारी थी
अहो भाग्य जिसे कहते हैं
माँ बनकर भी दिखलाई थीं
नारी में है सारे गुण नारी को बताने
आयी थीं
इंदिरा ......।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे बड़े नादान थे जो
उनके खून के प्यासे थे
अनजाने पूरी हो पायीं
जो कसमें वे खाई थीं
इच्छा-शक्ति को सर्वोत्तम वह
बतलाने आयी थीं
इंदिरा ......।

छोड़ दिया प्रश्न इंदिरा ने
उन माताओं की झोली में
जो कन्या लेकर रोती हैं
निष्ठुर अपनी गोदी में
नारी से नारी को सम्मान दिलाने
आयी थीं
इंदिरा........।

नारी जप है, नारी तप है
नारी सिद्ध, नारी सत्य
नारी के भीतर ही नर की
सारी सिद्धि समाई है
नर से आगे नारी को
वह ले जाने आयी थीं
इंदिरा........।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिस्ट

सेलिंग से आए देख पति को
नौ-सैनिक पत्नी इठलाई
चाय लाऊँ या कॉफी?
वैसे मैंने इडली भी बनाई

पत्नी के बदले तेवर देख
पति महोदय की भीगी रेख
ओह, आज फिर बिल प्रस्ताव
पर बहस करेगी
मेरी आँखों की नींद
वह आज हरेगी ....

क्या सोच रहे हो?
उत्तर की प्रतीक्षा में
श्रीमती जी खड़ी थीं
हड़बड़ा कर पति की
तंद्रा टूटी थी
गाल हिल रहा था
जानो उस पर चपत जड़ी थी
पति ने खुद को सँभाला
हुए सावधान

अरे, डार्लिंग
तुम भी क्या पूछती हो?
चाय-कॉफी, इडली
जो चाहो खिला दो

तुम तो जानती हो
मेरी साँसें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे इशारे पे
अपने दिन गिनती हैं

चापलूसी छोड़ो, बैग अपना खोलो-
दिखाओ, क्या-क्या लाए हो
लिस्ट की कोई
चीज़ छोड़ कर तो
नहीं आए हो?

इस मनहूस लिस्ट का
नाम आते ही
घर का मौसम बदल जाता है!

शीत-सा स्निग्ध कमरा
अँगीठी की तरह
लाल हो जाता है।

जब से आयी है घर में
लिस्ट लिए घूमती है
घर से निकलते ही
लिस्ट से सगुन करती है

हर बार कुछ न कुछ
छूट जाता है,
मैं भी
कभी कुछ तो कभी
कुछ बहाना बनाता हूँ

पर इस बार
मेरे कुछ कहने से पहले वह
सब कुछ समझ गई
सोच रहे थे कोई तरकीब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि कपड़ों से भरा सूटकेस
पत्नी ने जोर से पटका
बाप मेरा पागल था
और बुढ़वा था सटका

जाकर अभी सबको
बताती हूँ
उनके किए का मजा
उनको चखाती हूँ

हमारी तुम्हारी मुलाकात
वहीं कचहरी में होगी
या तो तुम रहोगे
या मेरी लिस्ट रहेगी!

सारे गवाहों और
सबूतों को देखते हुए
श्रीमान सैनिक जी को
आदेश हम देते हैं
आपका अपराध अक्षम्य है
काला पानी,
लेह-लद्दाख की सजा भी कम है

अपनी सिफारिश में
कुछ कहना हो तो कहो
अन्यथा
सारे सैनिक बिन ब्हारे रहो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस दिन

बादल जब
विप्लव बनकर आया
माँ के उदर से
बालक ने
बादल को गुहार लगायी-
बादल!
जरा-सा ठहरो
घर में एक नहीं निवाला
मेरी माँ भूखी है
चार दिन हो गये
मुँह में कुछ नहीं डाला।

उस दिन
बादल जब
विप्लव बनकर आया
रास्ते पर भिखारी ने
बादल को गुहार लगायी
बादल!
जरा-सा ठहरो
मैं जा रहा था
जिनके घर कटोरा लिए
वे दामन में
दाने छुपा रहे थे
मेरे लिए न सही
उन पर रहम करो
क्योंकि
अब तक मेरे बच्चे
उनके ही दम पर
अपना पेट भर रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उस दिन
जब बादल
विप्लव बनकर आया
पानी में पैर डाले
कोठी ने
बादल को गुहार लगायी-
बादल जरा-सा ठहरो
बादल के कुछ
कहने से पहले
बहते हुए झोंपड़ा
आ गया
बादल से बतियाती
कोठी से
धडाम से जा टकराया
कोठी को बड़ा
जोर से गुस्सा आया-
दिखाई नहीं देता है क्या?
मैं कोठी हूँ
जरा हटके नहीं जा सकते
समझता नहीं क्या?
चढ़े आ रहे हो

झोपड़ा मुस्कराते हुए
बोला-
कोठी हो तो यहाँ
क्या कर रही हो?

सिर ऊपर है
पाँव भी ऊपर रख लो
इतनी ऐंठ रही हो
तो पानी को
क्यों नहीं डाँट रही हो?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इसमें हमारे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गंदे मैले कपड़े और
बर्तनों की गंदगी है
अब तुम हो
कि इसके चरन धो रही हो!
कोठी निरुत्तर थी
मानो होठ सिले हों
आसमान से बातें करने वाली कोठी
गंदे झोपड़े के संग
पाँव सिकोड़े पानी में खड़ी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्सर ऐसा क्यों होता है?

जब पत्थर को रगड़
चट्टानों को मसल
औरों की ख़ातिर
कोई सीधा रस्ता देता है
तब ....?

तब वे खबरें
इन कानों तक
क्यों नहीं पहुँच पाती हैं?

लेकिन जब ....
जब किसी अपनों की बेगानी से
नादानों की नादानी से
कुछ दोष लगाए जाते हैं
तब मैंने देखा है
उन ख़बरों को
पानी की लहरों पर
छलमला रही थीं
हवा की झोको से

हो-हो कर
कानों से टकरा रही थी
पेड़ों पर फूल और पत्ते
आपस में फुसफुसा रहे थे
तब ....?
तब उन खबरों को
क्यों कोई रोक नहीं पाता है?

उन्हीं खबरों ने
उठकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता ने
कवि जी को दिया एक चाँटा
तुम इतने मूरख
हो...?
अपना ही करते हो घाटा
अरे,
तुम्हें इतना भी
पता नहीं...?
लोगों को अच्छाइयों की चिन्ता नहीं होती
ऐसी कविता और कहानी
बाजारों में नहीं बिकती
तभी,
तभी तो लोग
बुराइयों की तलाश में रहते हैं
सही है या गलत
परवाह नहीं करते हैं।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमरे केवल चार शहर में

अम्मा... अम्मा बाहर आओ
मामा जी को
पानी लाओ

झट अंदर से आती बहना
खाली गिलास
लोटे में पानी
जमकर पहने
रहती गहना

उठकर भैया
पाँव है छूता
चल हट,
पहने है जूता
बहुत दिनों से
कुशल मिली ना
कैसी है बेबी
औ' कैसे हैं जीजा?

फिलहाल सब
खुशहाल हैं
तू अपना कह
तेरा क्या हाल है?
अटैची नीचे रख
दिखती भारी है
तनिक खोल दिखलादे भैया
क्या भेजा बहुरानी ने?
मैं.......मैं...
मैं तो ऐसे ही आया हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

घर पर नहीं बताया हूँ

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ काम-काज ढूँढूंगा
तुम्हारे घर कुछ दिन रह लूँगा!

तू कैसा है भाई
आए खाली हाथ
जरा भी शरम न आयी......

मइया ने कुछ
भेजा नहीं
न कुछ भेजी भउजाई
पिछले ही हफ्ते
पड़ोसन का भांजा आया था
बनारसी साड़ी
और आगरे का पेठा लाया था!

आठ दिन तक
पड़ोसन ने
पूरी सोसायटी को
पेठे पर ही
बिठाया था!

तू ....तू ....
तू खाली हाथ आकर
मेरा और काम बढ़ाया है
अब तो मुन्नी को भेजकर
काजू की बरफी मँगवाती हूँ
प्रसाद ही सही
तेरे नाम पर बटवाती हूँ
तुम तो सब
कुछ जानते हो.......
तुमसे क्या छुपा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर राज घर का खुला है
जानो, तंगी चल रही ऐसी
केवल नाक है बची-सी
सुन ले भैया
सच कहती हूँ!

रात बिता लो
कुछ नहीं कहती हूँ
कमरे केवल चार शहर में
खुद मुश्किल में रहती हूँ
पैसा दे दो
जीजा से
वापसी का टिकट मँगाती हूँ
नहीं है पास
तुम्हारे तो
उधार कहीं से लाती हूँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों?

जो हाथ छुड़ा
कर चले गए
उन पर
क्यों आँसू बहाना है?

जो जाने वालों पर
रोते हैं
उनकी होती भोर नहीं।

वे छूटे आशिक
किनारे हैं
जिनको नदिया छोड़ चुकी हैं
ऐसे सूखे रेतों में
कोई घड़ा भराने आए
क्यों?
जो चले गए
वे चले गए
फिर भी महफिल
भरी हुई!

कुछ लोगों के जाने से
क्या खुशियाँ देखो
ठहरी हैं
जो ठहरा है
वो घना अँधेरा
फिर ऐसे घने
अँधेरे में
सूरज लाली
भरने क्यों आया?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो हँसता है
वो जीता है
जो रोता है
वो मरता है
कुछ लोगों के मरने से
क्या जीवन
खत्म हुआ है?

जो रोता है वह
मरा हुआ
फिर ऐसे मरने वालों से
कोई ज़ीवन जीना
सीखे क्यों ....?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हे कविवर!

उनकी करो वंदना
तुम्हारी कविता लिखवाते हैं
लूटपाट कर सबकी रोटी
तुम्हारी रोजी चलाते हैं
खुद की खुद ही वंदना करते
तुम्हारा नाम बढ़ाते हैं
हे कविवर!

है जड़ फसाद
दंगों की पर
सबमें सुलह कराते हैं
कलियुग के हैं कृष्ण बने
अरे, सबको नाच नचाते हैं
कविता के पन्नों में रचकर
बंसी मधुर बजाते हैं
हे कविवर!

सोचो, यदि ये नहीं होते
तो होता नहीं घोटाला
नहीं उठती थी कलम तुम्हारी
तुम नहीं होते मतवाला
इनके ही बलबूते पर
बच्चे तुम्हरे पलते हैं
हे कविवर!
हैं अशांति के दानव ये
पर दूत शांति के दिखते हैं
खाने के असली दाँत छिपा
हमको नकली दिखलाते हैं
अरे, कइयों के घर के चूल्हे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनके ही बल पर जलते हैं
हे कविवर!

कार गुजारी इनमें ऐसी
हरदम सबको रंगते हैं
इनके बल पर सात नहीं
सत्तर करोड़ चैनल चलते हैं
इनकी ही है देन
आज कि
तुमको भी लोग
कवि कहते हैं
हे कविवर!

अरे इनको ही तो देख लोग
कहावत लिक्खा करते हैं-
'अजगर करै ना चाकरी
पंछी करै ना काम'
जो इनसे पंगा हैं ले फिर
नाक रगड़ते रहते
हे कविवर!

इनके छल से छंद है बनता
दुष्कर्मों से बनता दोहा
चतुराई से चौपाई
अरे, गज़लों का
तनता है तंबा
तुम इन्हें
दंडवत् करो
तुम्हारा नाम अमर करते हैं
हे कविवर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रियतम

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रियतम तुमको
कैसे पाती
तुम नीर बनकर
मेरे इस तरह
निरीह हो जाते!

तुम आँखों में
बसते हो पर
मुझे नहीं क्यों दिख पाते?

बादल में
तड़नि ध्वनि सम
आते अरु छुप जाते
इन नैनो की
पटि तुम्हारे
चित्र नहीं खिंच पाती
सागर से मैंने पूछा था
नदियों से की थी विनती
करुण कहानी
कहती फिरती
मिलने का पथ
नहीं हूँ पाती!

तारों के बीच
बैठे तुम ध्रुव-तारे
सो चमक रहे

मेरे कर इतने छोटे
तुम तक पहुँच न पाते ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम मूरत बन दिल में रहते
साँसों में भी तुम्हीं धड़कते
दिन-रात तुम्हारी आहट सुनती
पर देख नहीं तुमको पाती
निष्ठुर मेरे प्रियतम कितने
मैं बात समझ नहीं पाती ...
प्रियतम।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हम ईश-पुत्र हैं

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो चाहे सो पाते हैं
रह गया शेष
अगर फिर भी
पुनर्जन्म ले आते हैं
जाकर कर दो ऐलान
दुश्मन के डेरे में

एटम बम के खिलौनों से
हम डरा नहीं करते हैं।
चट्टानों से टकराने वाले
फूलों से रौंदे जाने का
कब? कहाँ? कहीं
फिक्र हैं करते।

जब-जब ऐसे अत्याचार हुए
इस धरती पर
एक अनेक अवतार हुए
तब हममें से
कोई राम, कोई कृष्ण, नानक
और ईश बनते हैं।

बड़े-बड़ों को हमने लौटाया
खुली नज़र सब देख सके हैं
अब के तुम्हारी बारी है
यह सौगन्ध हमारी है
हम जो कहते- कर दिखलाते
हमें भला कोई रोक सके हैं?
हम ईश ....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमने सोचा
हमको मारा
यह बड़ी तुम्हारी भूल है-
'नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावक
न च एनं क्लेदयन तापो
न शोषयति मारूतः।'
इस गीता के मूल मंत्र से
हम अपनों का तर्पण करते हैं
हम ईश .....

नाम सुना होगा
मनु शतरूपा
तप का डंका बाजा था
त्रेता युग विष्णु अवतारे
जिन्हें हम राम कहते हैं
है आदर्श
सती अनसुईया
जिनके सत से
त्रैलोक्य विकंपित

उनके घर चलने में झूले
जिनको दत्त देव कहते हैं।
हम उनकी हैं संतान
सुनो
जो मर कर भी
अमर रहते हैं
हम ईश ...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज

लड़कियाँ कहाँ जा रही हैं?
होठ लहुलुहान हैं
बिखरे सारे बाल हैं
मुझे लगा ....
कहीं से
लड़ के आ रही हैं

एक श्रीमती जी ने कहा-
आप गलत समझ रही हैं
चुस्त आस्तीन है
आँखें रंगीन हैं
लुढ़कन सैंडिल में
मैडीश लगा रही है

मुझे लगा-
किसी रैंप से आ रही हैं
एक श्रीमती जी ने कहा-
आप गलत समझ
रही हैं
पर्स देखके
मेडवाइफ लग रही थीं।

बेल्ट देखके
बैंड वाली लग रही थीं
मुझे लगा ...
कहीं से
नौटंकी किए आ रही हैं
एक श्रीमती जी ने कहा-
आप गलत समझ रही हैं ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना वजह
दाँत दिखा रही हैं
रह-रह कर
कहकहे लगा रही हैं
कोई किसी के गले
तो कोई किसी की कमर में हाथ डाले
झूल रही हैं

मुझे लगा-
बहरूपिया का खेल
खेल रही हैं।

एक श्रीमती जी ने कहा-
आप गलत समझ रही हैं ....
हाथ में मैगजीन है
कुछ हिन्दुस्तानी
तो कुछ फिरंगी हैं
पढ़ती नहीं चित्र पलट रहीं हैं
मुझे लगा-
कहीं से
ऐक्टिंग सीख कर
आ रही हैं।

अबकी बार
मैंने किसी
को बोलने नहीं दिया
श्रीमती जी को
मुँह खोलने नहीं दिया
सही क्या है?
वह तो बता दीजिए
इन बालिकाओं की
स्थिति सुना दीजिए ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहने लगी
श्रीमती जी-
आप नहीं जानती हैं
ये लड़कियाँ-
कॉलेज जा रही हैं
हम स्वतंत्र हो गईं हैं
हमें बता रही हैं
फिर तो मैंने-
ठोक लिया सिर
पकड़ लिया कान
और होठ लिया भींच

अब तो जान लो नारी।
अपना आने वाला भविष्य
कैद... कैद.... कैद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुखौटा

अँगारों पर चलना
और आग से बचाना
समझ नहीं आता है
उनका ठहाके लगा कर हँसना
हमको-
मुस्कराने की मनाई
बात समझ नहीं आई
उनका यारी का वह दावा
और मेरी
दोस्ती को ठुकराना
समझी नहीं,
सितम ढाना यह
एक तरफ हो जाओ ना
आप हमें उनमें मिला दो
या उनको हमसे जुड़ा दो
यह मुखौटा ...?
उनको ...

हमको ...
नहीं छिपा पाता है
हमारी हलचल
मुखौटे के बाहर आ झलकती है
फिर
ऐसे मुखौटों को
उनका लगाना
अपने को छलना
और हमारा
इस कदर हैरान होना
समझ नहीं आता है।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन

जिसमें कोई
जान नहीं, अरमान नहीं
न खुद की है
अपनी पहचान भला
ऐसा जीवन
कोई चाहे क्यों है जीना?

जहाँ बचपन की किलकारी
चुलबुल नहीं जवानी का
ऐसा जीवन कोई
चाहे क्यों है जीना?

जिसके घर बादल
करुणा बरसाते
बिजली लाती अँधियारी
ऐसा जीवन कोई
चाहे क्यों है जीना?

जहाँ होठों पर लाली
चिन्तन की
आँखों में काजल
आँसू का
ऐसा जीवन कोई
चाहे क्यों है जीना?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हे प्रभु!

हे प्रभु! तुमसे अरज करूँ
धीर, वीर निर्भीक बनूँ
तूफानों से लड़ने वाला
पत्थर को पिघलाने वाला
आसमा को छूने वाला
मैं वह सिंधु-समीर बनूँ
हे प्रभु।

सज्जन का दुख पीर हरूँ
प्रलय पापी का शूल बनूँ
जन-जन की मुस्कान बनूँ
मैं वह राम का बाण बनूँ
हे प्रभु।

तेज पवन का झोंका बनूँ
जो हिले ना
वह गिरिराज बनूँ
जिस जहाँ में
गौतम रहते थे
पाहन पर लक्ष्मण सोते थे
मैं बनकर वह भूमि तपूँ
हे प्रभु।

भय का तम
भरमाने वाला
पल में दाँव कुचलने वाला
अँगारों पर चलने वाला
मैं भारत का भाल बनूँ
हे प्रभु।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन री माई

सुन री माई!
किसी माटी से गई बनाई?

बापू ने
तेरी गुड़िया छीनी
अम्मा ने अपनी लोरी
एक अजनबी के संग कर दी
एक दिन तेरी फेरी।
आँसू पीकर
तू मुस्काई
सुन री माई!

अपने घर में
बनी परायी
औरों का घर
तू अपनाई
सखियाँ छूटीं,
लहँगा छूटा
खुद के घर से नाता टूटा
आँचल में
सुख-दुख लेकर
आगे कदम बढ़ाई
सुन री माई!

बचपन में
आ गई जवानी
बचिया से
बन गई बहुरानी
लोरी सुनती बिटिया बन गई
खुद लोरी गाने वाली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे हँसकर
तूने अपनी नींद गँवाई
सुन री माई!
मुन्ना, मुन्नी को रही हँसाती
खुद काँटों पर चलकर
ख़्वाबों की पोशाक पहनकर
अरमानों की डोली चढ़कर
दादी-नानी बनते-बनते
तू बुढ़िया कहलाई
सुन री माई!

बेटों को
ले गई बहुरिया
बेटी को ले गए जमाई
तब आस लगाके
बैठ गई
कौन नैया पार लगाई?
सुन री माई!

बीमारी की ख़बर सुनी तो
बेटा सी. एल लेकर आया
एक दिन उसका
बाँध टूटा
और गया खिसियाई
माँ! तेरे कारण
मैंने अपनी सारी सी. एल हैं गँवाई ...
जब बच्चों की
यह हालत देखी
तब तू रोक सकी
न रूलाई!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आखिर वह दिन भी आया
जब हो गई तेरी जग से
विदाई
तू युग-युग से खेती आयी है
इस जग की नैया को
सदा उतारे पार सभी को
ना ली कभी खेवाई
शत्-शत् प्रणाम तुझको
तुम्हें री माई।

सुन री माई
किस माटी से गई बनाई ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं दुख से नहीं घबराती

मैं दुख से नहीं घबराती हूँ
हर दुःख का जश्न मनाती हूँ
जब-जब उससे भेंट होती है
मैं मंगल गीत बनाती हूँ

मेरे बंगले में एक कमरा है
मैं आसन उसे लगाती हूँ
भाव-शब्द का हल्दी कुमकुम
सादर उसे चढ़ाती हूँ

लाली रेखा होठ पै रखकर
अभिनंदन गीत सुनाती हूँ
खट्टा-मीठा जो कुछ भाता
हाथ जोड़ जिमाती हूँ

तब देखूँ कि उस आसन पर
द्रोणाचार्य विराजे हैं
नहीं मिलती जब दृष्टि अर्जुन की
मैं एकलव्य बन जाती हूँ

फिर देखूँ कि उस आसन पर
शुक्राचार्य पधारे हैं
नहीं मिलती जब जीत जंग की
मैं तुरन्त बलि बन जाती हूँ

कभी देखूँ कि उस आसन पर
ऋषि दुर्वासा आसन डाले हैं
जब बढ़ता है क्रोध अग्नि बन
द्रुपद-सुता बन जाती हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

फिर देखूँ कि उस आसन पर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ब्रह्मसुता कमलासन हैं
डाल के आँचल बैठ हूँ जाती
माँ शब्दों से दुलराती है

सच कहती हूँ मित्र सुनो
दुख सबसे सच्चा साथी है
मौसम कितना ही बिगड़ा हो
हर मौसम का साकी है

मैं पूछती हूँ प्रश्न एक क्या
दुख कोरा दुख दे जाता है
जीवन के कच्चे विषयों को
क्या एक न पक्का कर जाता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह नहीं हमारी हार

यह नहीं हमारी हार
जिसे तुम कहते हो
तुम खाते चाँदी के चम्मच से
सोने की बड़ी कटोरी में
हर एक निवाला
गरम भात का
हम हाथों पर खाते आए हैं
तुम हरदम सही
स्वाद से
वंचित होते आए हो
नींद क्या है
मस्त सेज पर
भला कोई क्या
बतलाएगा...?
भरी तिजोरी
स्वर्ण महल में
कभी कोई सो पाएगा?

हमसे पूछो-
नींद हमें
ले गोदी में दुलराती कैसे?
हर लेती है सारे श्रम
थपकाती लोरी ऐसे
तुम ऐसे मीठे सपनों का
अंदाज लगाते आए हो ...

है हिम्मत तो
चलकर देखो
काँटों से लड़कर देखो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मखमली-गलियों में जीवन
लोग भला क्या जीते हैं?

बोलो-
सही कहती हूँ न?
तुम हरदम
अपने को झुठलाते आए हो
यही नहीं हमारी हार
जिसे तुम कहते हो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम और मैं

तुम मेरी आरज़ू को
कफ़न पहनाते रहो
मैं हर दिन
नई-नई आरज़ू
ले आती रहूँगी
तुम मेरी आरज़ू को
अपने पाँवो तले
दबाते रहो
गुनाहो से कबूलते रहो
मैं रोज-रोज
नए गुनाहों को
जोड़ती रहूँगी
तुम मेरी आरज़ू को
हर मोड़ पर
छोड़ते रहो
मैं रोज-रोज
अपनी नई-नई आरज़ू से
तुम्हें मिलवाती रहूँगी
मेरी आरज़ू
हनुमान की पूँछ है
कुंभकरन की भूख है
सावधान!
मेरी आरज़ू को
छेड़ना मत
नहीं तो
नतीजा तुम जानते हो ....?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले पहल

पहले गम के आने से
उनकी छाँव चली जाती थी

अब उनकी याद आते ही
गम की बरसात हो जाती है।

पहले
उनको देखकर ही
मेरी साँसें
चलती थीं
अब,
उनकी याद आते ही
मेरी साँस
बंद होने लगती है।

पहले
उनकी मिलाई से
जो सुकून मिलता था
उसको बताने के लिए
मेरे पास
शब्द नहीं होते थे
अब
उनकी बेवफाई से
जो दर्द मिला है
उसको जताने के लिए
मेरे पास
केवल दो शब्द हैं
पहला
पहले वे मुझसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दूर थे, बेवफा थे
मैं वफा जानती थी।

दूसरा-
अब वे मेरे पास हैं
वफा करते हैं
और
मुझे बेवफा दिखते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वर्ग मही पर लाना है

स्वर्ग मही पर लाना है
जग को प्रेमामृत से
नहलाना है
वैर की चटनी
मुरब्बा लोभ का
खाकर हमने
देख लिया
रसना जैसी की तैसी
मुफ़्त में
हमने
रोग लिया!

अब
इस महारोग से हमें
सभी को मुक्त कराना है
स्वर्ग ....

हम सबने
ये सुनी कहानी
जैसी करनी वैसी भरनी
पर ....?
हम बार-बार
भूल जाते हैं
बोए काँटे बबूल के फिर ....?
आम कहाँ लग पाते हैं?
जो कहकर
हमसे बड़े गए
अब हमको
उस पर चलना है
स्वर्ग मही ....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कुछ करतूतों से
हमने खुद को बाँधा था
नहीं करेंगे चूक
अभी जिसने हमको साधा था
हो जाने दो
जो कुछ भी
जो अपने हैं
वो अपने हैं
औरों को घर अपने लाकर
अपने को लज्जित
नहीं करना है
स्वर्ग मही ....

जो रोगी हैं,
जो भोगी हैं
हम उनका उपचार करेंगे
कुछ रोगों के
हो जाने से
क्या सभी बीमार बनेंगे ....?
प्रेम-वैद्य से
रोगों का हमें
उपचार कराना है
स्वर्ग मही ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे काल

अरे काल ....।
तू मुझे मत ललकार
जिस दिन बन जाऊँगी
मैं विकराल
हो जायेगा तेरा
बड़ा बुरा हाल

सावधान,
गर तूने मेरी
बात नहीं मानी
लोहे की संदूक बनवा दूँगी
तुझको उसमें
डलवा दूँगी
और ....
और, जानते हो डाल दूँगी
उस पर मोटी ताल
अरे काल ....
तू चीखेगा-चिल्लाएगा
मैं नहीं सुनूँगी
तेरी बात
क्यों ....?
जानना चाहते हो ....?

कह गए बुजुर्ग हमारे
कभी न करना
कल पर विश्वास
गर हाथ छुड़ाकर चला गया
तो बनकर
आएगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
वह काल
इसलिए
हम तुम्हें नहीं देंगे
वह चांस
अरे काल!

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ शारदा

सोते हुए कवि को
माँ शारदा
पुकारती-
कैसा मेरा बेटा है तू?
सोता है
तू नींद भर
मैं सारी रात जागती

मैंने
तुम्हें कंठ दिया
मैंने तुम्हें स्वर दिया
मेरा सब माल हड़पे
सोते चादर तान के
आस-पास मेरे सब
बेहाल जन
तू नहीं बोलता है
अपनी जुबान से
मैंने तुम्हें प्यार दिया
अपना दुलार दिया
पर तू ....?

बदले में
गूँगा-बहरा बनके
दिखा ही दिया
मैं तो
ऐसा बेटा किसी भी जन्म में नहीं माँगती।

है मेरा कर्ज तुझपर
तुझको चुकाना होगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मेरा बेटा कहलाने को
फिर-फिर
फर्ज़ निभाना होगा।

रेखा-चित्र खीच
तू अपने समाज का
मेरे अक्षर ज्ञान से
आकाश तू गुँजा दे आज
चाहे मेरा बेटा हो
मुफ्त में
कोई भी मैं
विरासत नहीं बाँटती!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं आज़ाद भारत में कैद हूँ

वेदी पर फूल चढ़ाते हुए
हाथ काँपने लगे,
क्योंकि वेदी थी हिल रही
और फूल थे गिर रहे,
थोड़ी देर में वेदी से
एक आवाज़ आयी-
क्या देख रहे हो?
बेरहम अंग्रेजी बेत से
अभी तक नहीं सँभल पाया हूँ
जब कोई हार चढ़ाने आता है
पहनने की कोशिश करता हूँ
उठकर खड़ा होता हूँ
पर?
पर हरबार नाकाम हो जाता हूँ
क्यों?
हार पकड़े हाथ
इस कदर काँपने लगते हैं
कि गले में डालने से पहले
यूँ ही
एक-एक फूल बिखर जाते हैं
हार चढ़ाने वाले की
जुबान तो बँधी हुई थी
पर, आँखों के आँसू
छलछला के निकल गए
जब
काँपते हाथों ने
ढुलकते आँसुओं को
पोंछकर
अपने सिर चढ़ा लिए,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दोस्त, यह आजाद हिन्द के आँसू हैं
इनका स्वाद तो चख नहीं सका
कम से कम
आँसू ही चढ़ा लूँ,
तब
बँधी हुई जुबान घिघियाने लगी-
हाय रे वतन के प्रेमी!
काश, मैं भी
तुम्हारी यज्ञशाला में शामिल हुआ होता।
आहुति की
एक गिनती और बढ़ी होती,
काश!
मैं भी तुम्हारी बगल में
दफ़न हुआ होता,
देश आज़ाद है यह
सोच के मगन होता
हर, हार भेंट करने वालों के
आँसू सिर चढ़ा लेता
पर?
पर मैं ऐसा नहीं कर सकता
क्योंकि
मैं आज़ाद भारत में
क़ैद हूँ।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देशभक्ति

एक दिन
कपड़ा तनकर खड़ा हो गया
दर्जी से अकड़ा
और कहने लग गया-
भाई! तूने मुझे बहुत रुलाया है
हसीनों के सीने से सटाकर
मेरा दम घुटाया है!
बदले में दर्जी ने
आँख तरेरी-
अबे, तूने ये सब
कहाँ से सीख लिया?
कपड़ा मुस्कराया-
क्या सवाल पूछते हो?
आदमी के साथ रहता हूँ
ज़ाहिर है, जो कुछ करता हूँ
उसमें आदमी का हाथ है
पर याद रहे ......
आदमी की गलती
मैं नहीं करता हूँ।
दर्जी गुस्साया-
ये कपड़े, नो फिलासफी
मैं जैसा कहता हूँ तू वैसा कर
तूने मुझे नहीं,
मैंने तुम्हें खरीदा है
तमीज से बात कीजिए
मैं आपकी हर बात मानता हूँ
पर, बिन बाँहों में
मैं और नहीं झूल सकता।
आदमी का पता नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पर मैं ....?
और निर्लज्ज नहीं हो सकता
जिस दिन से मंच पर
धड़ाम से गिरा हूँ
उस दिन से कलेजे पर
हाथ रखकर चलता हूँ
फिर कहीं गिर न जाऊँ
उसी सदमें में
हरदम रहता हूँ
तूने मुझे
ऊपर से काट डाला है
नीचे से छाँट डाला है
मैंने
सब कुछ सह लिया
जितना बन-पड़ा
मैंने तुम्हारा संग दिया
पर अब मैं
चुप नहीं रहूँगा
क्योंकि
तूने मेरे देश पर
बुरी नज़र डाली है
लोग मुझे
विदेशी कहने लगे हैं
सुनो, अब मैं क्या करने वाला हूँ
बीच बाजार में
नाड़े से निकल जाऊँगा
गली हो या मंच
चेन से खिसक जाऊँगा
हाँ, एक और बात
बताए देता हूँ-
उसे केवल
कोरी धमकी मत समझना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैं कपड़ा हूँ ....
ज़िन्दगी में सिर्फ़
एक बार कटता हूँ
तुम्हारी तरह रोज-रोज नहीं
दोस्त! मेरी आँखें छलछला आयीं
वह भी एक जमाना था-
जब हर बात में
आदमी की धाक होती थी
यह भी एक जमाना है
सबको चुनौती
देने वाला आदमी
आज कपड़े की
धाक सुन रहा था
खुले चौराहे पर
कपड़ा चैलेंज कर रहा था-
मैं आदमी नहीं हूँ
मैं कपड़ा हूँ
ज़िन्दगी में सिर्फ़
एक बार कटता हूँ
मैं कपड़ा हूँ ....
मैं कपड़ा हूँ ....।

•

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ भारती पुकारती

हे देशवासियों!
भारत माँ
कब तक यह अपमान सहेगी?
इस क्रन्दन में घुट-घुट कर
कब तक इसकी शान बचेगी?

कारागार में बापू गए
तब ये रोया करती थी
आज़ादी के शहीदों पर
बेचैन सदा ये रहती थी।

भरतपुत्र, तुम भूल न जाना
माँ की तड़पन-बिलखन को
बुरे दिनों से गुज़र चुकी है
और न ढाँढ़स इसके मन को

हे लाल, अगर तुम भूल गए
इस माँ की कुर्बानी को
नारी माँ बनना छोड़ेगी
स्वीकार करो इस वीरानी को

भाई पर भाई वार करे
यह कैसी विपदा आई है
क्या इन्हीं दिनों के ख़ातिर
औरों की लाठी खाई है?

पराधीन की करुण कहानी
अब तक बहुतों को याद जुबानी
सेलुलर जेल कथा इसकी
जहाँ पड़ी हुई हैं सभी निशानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ जाओ, मिल बाँट रहें
माँ के निर्मल अंचल में
जन्म-भूमि का कर्ज़ बड़ा है
फर्ज़ करो, जब तक प्राण रहे तन में।

•

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस देश को अपना कहते हो

जिस देश को अपना कहते हो,
उसकी सुनो कहानी
तुम्हें सदा शीतल छाया
खुली हवा एहसास हो
इसके ख़ातिर कितनों को, क्या कीमत पड़ी चुकानी ..
जिस देश ....।

अपनी माता बंदी थी
जंज़ीरों में जकड़ी थीं
देख रहे थे उनके अपने
दम साधे सब ठहरे थे
खुदका घर खुद फूँक रहे थे, वंह अद्भुत बड़ी कहानी ....
जिस देश ....।

अपने घर मेहमान बने थे
औरों के मोहताज हुए थे
खुद के घर में कैदी थे
क्या उनके हाल कहें?
सोचो कैसी रही होगी, उस दिन की ज़िन्दगानी ....
जिस देश .....।
माँ-बहनें घर में दुबकी थीं
सब अरमा लेकर सुबकी थीं
तब राखी और सिन्दूर का
यहाँ कोई नहीं त्यौहार था
क्या जाने कब कौन छुटे, थी सस्ती हुई जवानी ....
जिस देश ....।

ख़ून खौल रहा था पानी बनकर
नैनों से अग्नि निकलती थी
रग-रग में विद्रोही ज्वाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बिजली बनके कड़कती थी
पुरखों का पौरूष पीट रहा, था ऐसा दुश्मन बलशाली ....
जिस देश ....।

जिस देश में नदियाँ बहती हैं
उसे देश के वासी प्यासे थे
जिस देश के पाहन फल खाते
भूख से जन अकुलाते थे
आह दबा कर सब बैठे थे, क्या होने वाली होनी ....
जिस देश ....।

आओ मिलकर प्रण कर डालें
देश-भक्तों पर मर मिट जाएँ
धरती के कण-कण में है
इनकी अमर निशानी
युगों-युगों तक हम गाएँ, इनके पुरूषार्थ की कहानी ....
जिस देश ....।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसान

तन पर नहीं एक परिधान
इन साँचों में कितनी जान
तड़के उठ करता है
देखो माटी को प्रणाम
सेवा करता पशुओं की
धरती को खूब सँवारे है
मुहल्लत कभी नहीं लेता
चाहे, होली और दिवाली है।
है ताकतवर वह इतना
कि सूरज हाथ मिलाता है
उसकी तारों से गहरी मैत्री
चाँद उससे बतियाता है
ऐ, वीर बहादुर कभी ना हारे
लू हो या पाला
अपनी मेहनत से सदा खोलते
अपने जीवन का ताला
जब-जब रोटी-भात मिले
मीठे फल और साग मिले
हाथ जोड़कर सबसे पहले
कर लेना इनको प्रणाम
ये हमारे अन्नदाता हैं
ये धरती के भगवान
इनका छोटा नाम
जगत में- करते हैं बड़ा काम
जय हो, जय हो जय किसान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन

तू भी मन कैसा है
तब भी तू रोता था
अब भी तू रोता है

खेल रहे थे संगी सब
घुमरी और परौवा
कोई आँख-मिचौली
तो कोई पकड़म-पकड़ौवा
थी दादी डाँट के अंदर लाती
मइया आँख गुरेड़े
तब कैसे असहाय बैठ तू
चुपचाप सुबकता था

बंद सिटिकिनी पर आँखें
सदा गड़ाए रहता था
खुला द्वार जब देखे
सरपट दौड़ लगाता था
पर आज?
है सिटिकिनी खुली हुई
दरवाजे दो फट पड़े हुए
दौड़ लगाते पैरों को देखो
है जमीन पर अड़े हुए

हो विलम्ब बाहर कितना
कोई अंदर डाँट न लाता है
अब कोई हम-उमर कहीं से
सीटी बजा न बुलाता है।

ओ हार-जीत की किलंकारी
वो तेरी-पारी मेरी-पारी
वो दादी की डाँट-डपट
मन सुनने को ललचाता है

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह पटरी, वह दवात
वह बोरी का टुकड़ा
बिन चप्पल की धींगा-मस्ती
पाठशाला रस्ते का भँगड़ा

बैठ बीच में बोरी पर
इमली का भोग लगाते थे
अक्सर आते थे कोई काका
पकड़े घर ले जाते थे

बाबूजी बैठे चौकी पर
गालों पै चपत लगाते थे
बंद करुँगा भूसे की कोठी में
रोज यही धमकाते थे

मुँह नीचे कर, अपराधी बन
सब कुछ तब सुन लेते थे
हम बनें नहीं क्यों बाबूजी
खुद पे खुद गुस्साते थे

पर आज
कहीं बैठे हम कुछ भी करें
कोई नज़र ना रखने वाला है
है छप्पन भोग बना हुआ
भाता नहीं एक निवाला है
रोते थे बाबूजी बनने को
अब दादा बनने को आए
तब चिंटु, पिंटु, मुन्नी, गुड्डी
कहलाने को जी अकुलाता है

तू भी मन ....
तब भी ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उधारी

ज़िन्दगी में उधारी किए जा रही हूँ
चुकाऊँगी कब लिए जा रही हूँ

ओ मइया का चुम्बन
ओ बहना का आँचल
ओ बापू का कन्धा
ओ भैया की उँगली
ओ सूरज की लाली चुसे जा रही हूँ। ज़िन्दगी में ....

ओ मुस्कान बेटे की
बेटी की ममता
हमदर्दी पड़ोसन की
दोस्ती का कंगन
ओ मही का रसोदन पिए जा रही हूँ। ज़िन्दगी में ....

ओ कोयल के गाने
ओ मुरगे की कुकड़ूं
ओ सुमनों की गंधें
ओ भौरों की गुंजन
ओ चंदा की चाँदी चखे जा रही हूँ। ज़िन्दगी में ....

ओ झरना का पानी
ओ पवनों का झोंका
ओ आमों की बौरें
ओ केदली की गाछी
ओ पाहन का गहना पहने जा रही हूँ। ज़िन्दगी में ....

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कवि औ' प्रजातंत्र

एक कवि जी
सोने की कोशिश कर रहे थे
कविता और कवि-सम्मलेन के
टेंशन से निकलने की
साजिश कर रहे थे

जाने कब आँख लग गई
सपना आया या हकीकत थी
कह नहीं सकते
कवि जी ने-
देखा कि सिरहाने
प्रजातंत्र जी डटे थे
आँख लाल
तना चेहरा
मतलब ....?
महाशय नाराज लग रहे थे
आग के गोले की तरह
आँख निकालकर बोले-
कवि जी!
अच्छी दिल्लगी कर रहे हैं
मैं .... मैं इतना टेंशन में हूँ
और आप ......?
सो रहे हैं?

कवि जी
हाथ जोड़कर बोले-
महोदय,
अभी आप जाइए,
थोड़ी देर में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बुलाता हूँ
तो आइए।

प्रजातंत्र जी अकड़े
वाह जी वाह ...
आप किसको मूर्ख बनाते हैं
जानते हैं ....?
आप मेरी ही वजह से
गोष्ठियों तक पहुँच पाते हैं
ठीक है बोलिए?
यहाँ नहीं जी,
दिल्ली चलिए
वहाँ क्यों .....?
क्योंकि
वहाँ सारे जानवर
अनशन पर बैठे हैं
उनकी माँग है
चारा का घोटाला बंद करो।

कवि जी ने
मुँह फाड़ते हुए प्रश्न किया
फिर ....?
फिर .... वहाँ मेरा क्या काम है?

अजी, आप ही को तो
आवाज़ उठाना होगा
मुलायम रबड़ी की माया से
इन जानवरों को
बचाना होगा

मतलब ....?
मतलब साफ है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जानवरों की वकालत कीजिए
घोटाला कर्त्ताओं को
दरभंगा भेजिए।
नहीं तो ....?
नहीं तो बता दूँ ....?
हाँ ....।
नहीं तो बता दूँ
हाँ, हाँ बता दीजिए
आपके देश की पार्टी छोड़कर
दूसरे देश को ज्वाइन कर लूँगा।

कवि जी का
मुँह खुला का
खुला रह गया

क्यों,
इतना हैरान क्यों हैं?
पहले मुँह बंद कीजिए
स्वाईन लू का डर नहीं है?

सावधान,
अब की जाऊँगा तो
लौटकर ना आऊँगा

सत्याग्रह और क्रान्ति ने मुझे
आपके
देश में लाया था
आप लोगों ने
उनको ठुकराया है
सच
मैं आज
यही बतलाने आया हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कवि जी की
आँख खुल गई
क्योंकि
पत्नी देह झकझोर रही थीं

क्या हुआ ....
तुम सो रहे हो?
माँ जी,
घर छोड़कर जा रही हैं
कह रही हैं-

उनका
इस घर से कोई नहीं नाता है।
जा रही हैं गाँव
जहाँ उनका दूसरा बेटा है
कहती हैं-
वो हमसे ज्यादा
उनको अपनाता है।

कवि जी
सिर पर हाथ रखे
सोच रहे थे-
पत्नी और प्रजातंत्र को
जनता तक पहुँचाने के लिए
शब्द ढूँढ रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेटी

बेटी को
जग
कहे पराई ....?

दोनों घर की
मर्यादा को
मूरख दुनियाँ
ठुकराई ....

मायका उसका
दीपक
ससुराल है उसकी
बाती
त्याग तेल में
प्रेम दीप है
सदा जलाती आई
बेटी को ....

कोयल बन बाबा
घर चहके
साजन के घर
बुलबुल
दोनों कुल का मान
सदा से ढोती आई
बेटी को ....

महादान सुख
बाबा पावैं
सफल यज्ञ
पति करावै

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों घर की
सारी रस्में
खुद कंधे पर ढोती आई
बेटी को ....

चंचल चित्त
मायके में रखती
ससुराल में
काया धरे
दोनों घर बेटी बँट गई
रखे न अपने हित कुछ भी
है सदा लुटाती आई
बेटी को ....

चढ़ चुकी है
चाँद चढ़ाई
नाप चुकी
सागर गहराई
दोनों घर को
जो जनती है
उसे मूरख दुनियाँ
कहे पराई
बेटी को ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीस जनवरी, दो अक्टूबर

एक छड़ी
और
एक लंगोटी
ऐनक देकर
चलते थे

बच्चे बूढ़े सब
कोई उनको
अपना बापू कहते थे

जहाँ-जहाँ पग रखते थे
दोस्त सभी बन जाते थे
ईश्वर अल्ला एक ही नाम
सबको वे समझाते थे
बच्चे बूढ़े ....

मुट्ठी भर काया
थी उनकी
दहशत उनकी भारी थी
उनकी कारीगरी
कहें तो
हुकुमत उनसे हारी थी
जो चाहे कर दिखलाते थे
ऐसे धुन के पक्के थे
बच्चे बूढ़े ....।

कहकर गए
एक बात सभी से
सुन लो भैया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मंत्र अभी से
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाँध के देखो खुद की मुट्ठी
होती ताकत दूनी है
ऐसी-ऐसी सीख
सभी को
हर दिन वे सिखलाते थे
बच्चे बूढ़े ....

रामायण की महिमा भारी
बाइबिल गाथा गाते थे
क्यों कुरान झुकेगा अपना
गीता अपनी माता है
गुरू द्रोण जब तक रहेंगे
एकलव्य का नाम रहेगा
ऐसे-ऐसे किस्से कहानी
रोज ही वे बतलाते थे
बच्चे बूढ़े ....।

करनी हो
गर प्रेम परीक्षा
पढ़लो
भरत की जीवनी
वैर-भाव जगे जब मन में
याद करो पति मंदोदरी
बह गया रावण
तज के
सिखावन
क्या हाय उसके आया था
ऐसी-ऐसी सत्य कथाएँ
सभी को वे सुनाते थे
बच्चे बूढ़े ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीस जनवरी
दो अक्टूबर
छुट्टी खूब मनाते हो
रखकर हाथ हृदय पर कहदो
क्या बापू का कहना
करते हो ....?
सच बराबर तप नहीं
झूठ बराबर पाप है
इन बातों को जो जाने है
मुश्किल उससे डरती है
ऐसी कथा-कहानी उगती
जब ऐसे वीर जनमते हैं
बच्चे बूढ़े ....।
एक छड़ी ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मृति

सुना था
कि समय का परदा
बहुत मोटा होता है
जख़्म भरता है
टीस मिटाता है
पर
मेरे साथ ऐसा नहीं होता है
शायद समय के साथ
समय बदलता है
शायद विस्मृति ने
स्मृति का अपहरण
कर लिया है
शायद स्मृति ने विस्मृति का
चीर-हरण कर लिया है
क्योंकि मैं एक
खिलखिलाहट से बचना चाहती थी
पर वह
वह मुझे हर रोज
मेरे बिस्तर पर
चौके में
और मेरे
स्टडी टेबल पर मिलती रहती थी

मैं एक रोशनी से
अपना चेहरा छुपाना चाहती थी
पर वह ....?

वह मुझे हर रोज
मेरी आँखों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी साँसो में
और मेरे दिल में
दिए की तरह जलती थी

मतलब ....
विस्मृति और स्मृति ने
मुझे हराने के लिए
गठबंधन
स्वीकार किया था

मतलब ....
जो लोग
पहले अनुमान लगाते थे
वो अब
अरबरा गए हैं

आप भी मान लीजिए
सब लोग
जो कहते हैं-
वो हर बात
सच्ची नहीं होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि सम्मेलन

एक महाशय ने
दूरदर्शन पर
एक दिन
कवि-सम्मेलन देखा
मन मोर की तरह नाचने लगा
और
होठ भात की तरह भदकने लगा
अगले कवि सम्मेलन में
मैं भी अपनी कविता पढ़ूँगा
अगर खुद लिख न सका
तो पड़ोसी से ही ले लूँगा
भगवान को धन्यवाद देते हुए
ऊपर की ओर
अपना हाथ उठाया

प्रभु!
बड़ा ही सुन्दर विचार
मन में है आया
महाशय जी!
सपने से निकलकर
हकीकत में आएँ
अपने लंगोटिया यार को
जल्दी से फोन घुमाएँ

अरे यार!
आज तो दूरदर्शन पर
बड़ा मजा आया
फिर मैं सोचता हूँ
कुछ अपनी रचना भेज दूँगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता लिखते हो?
तुम भी क्या पूछते हो!

गृहस्थ आदमी हूँ
सोते-उठते
खाते-पीते
हर पल कविता छलकती है।

मित्र ने गम्भीर
स्वर में कहा-
ठीक है-
फिर भेज दो।

पर मैंने
अभी कविताएँ लिखी नहीं हैं
जब तक मैं लिखता हूँ
तब तक तुम
अपनी भेज दो

तू पागल हो गया है क्या?
मैं खुद ही
अपनी फिकर में हूँ
कल वाली गोष्ठी का
मैं भी एक मेम्बर हूँ।

मैंने-
दलितों पर एक कविता
अपने दोस्त से
माँगी थी
शाम के पाँच
बज रह हैं
दोस्त अब तक नहीं आया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने में घंटी बजी फोन की
कविता वाले मित्र ने पहले ही हँसी हँस दी
कवि ने कहा-
यार, तू कमाल है
अभी तक कविता नहीं भेजी
मेरा बुरा हाल है
फोन की दूसरी आवाज़ ने
जो कहा
कविजी सुन नहीं पाए
रिसीवर हाथ से छूट गया था
पहले वाले
महाशय उन्हें
अपनी बाहों से उठाए
दूरध्वनि से
ध्वनि आ रही थी-
मित्र तूने देर कर दी थी
तुझे देने वाली कविता को
मेरी पत्नी ने
अपनी सहेली को
दे दी थी।

•

Aganigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत का लाल

सिर पर साफा
साज शिशु
शीतल में
सुलाना ना भैया
सूरज ने सेंक सँवारा है
भारत का अपना
लाल भैया

इन नन्हें-नन्हें हाथों को नाजुक ना
समझना वा भैया

लिक्खेगे तकदीर
देश की
उन्हें ऐसा किया है
तैयार गोइया

आता नहीं जिनको
जलती रेतों पर चलना

होती नहीं उनके
खातिर बगियन की हैं बहार
भैया

जो गहरे पानी ना
उतरै
बैठे चुप किनारे हैं
होती नहीं उनके
खातिर मोतीयन की ये माल
भैया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन नहीं भाये
जिनको कोयल की मीठी बोली
वो क्या जाने
कैसा होता
छप्पन भोग सवाद
भैया

जो कभी ना
करते काज किसी का
नित निज-निज
नाम रटा करते
वो क्या जाने सगरी
वसुधा पर होता कैसा राज
गोइया....?

जो दुख में धीरज
ना रखते
सुख में होश गवाते हैं
वो कैदी भोग विलासी है
जग में कायर
कहलाते हैं
जिनके लहु में जोश जीवाणु
हर पल नहीं शोर मचाते हैं
वो जिन्दा हैं कि
मुर्दा हैं कैसे
कोई जाने सुन
भैया।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी कविता

मेरी कविता
हुई बीमार
कोई जाकर
वैद बुला दो जी
काम-क्रोध की
जूड़ी आवै
राग द्वेष से
थर-थर काँपै
जाकर कह दो
सिम्टम चार
मेरी कविता

बड़ी स्वस्थ हुई
करती थी
कभी ना पड़ती थी बीमार

जाने कैसे
सड़क निकल गई
हो गई हालत ऐसी आज
मेरी कविता
मीठी इसकी
बोली थी
मीठा था व्यवहार

जाने किसकी
नज़र लगी
कड़वाहट भर गई
आज
मेरी कविता....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदा सत् पर
चलती थी
देश-प्रेम पर
मरती थी
अपने से ज्यादा
सबका ख़्याल रखती थी
जाने क्या बात हुई
वह बात अपनी करती आज
मेरी कविता....

जो कोई इसका
उपचार करेगा
जीवन भर एहसान रहेगा
अपना सब कुछ दे दूँगी
उसको उपचार कराई
इसके स्वस्थ होने में ही
है हम सबकी भलाई
गर हो ना सके
इसका उपचार
तो ....?
तो-
कवि का गला दबा दूँगी
आज
मेरी कविता....

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ये कैसी हरियाली है?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये कैसी हरियाली है....?
ये कैसी है विरानगी ....?
चलते बड़े शान से
और रहते परेशान हैं
दिखते सेहतमंद हैं
एक में न जान है
रेशमी रूमाल है
सोने की दीवार है
अन्दर झाँक देखो
मैल और म्लान है
आदमी का आदमी पर देखो
बड़ा जोर है
उसको उठा कर
देखो बड़ा कमज़ोर है
किसको ....?
विश्वास, प्रेम, आशा
इसीलिए दिखती हरियाली है
पर ....?
पर होती है-
विरानगी
ये कैसी हरियाली है
ये कैसी है विरानगी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हे भगवान

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हे भारत के भगवान!
प्रश्न पूछ रहा है तुमसे-
आज भारत का इंसान
क्या इन्हीं सुकर्मों से
प्रेरित हो भू पर
आना पड़ा था
अवतरित हो?
या....

उस धरती को
कहाँ ले गए
जिस पर खुद
जन्मे थे

देख लो ....
तुम्हारी शुचि
धरनी पर
पाप का राज है
तुम्हारे नाम पर हो रहे
सब काज हैं
आप तो कहा करते थे-
होगी जय .... होगी जय ....
सत् की ....
पर यहाँ तो
आज नीति ही बदल गई है
राम पर रावण की
नीति भारी पड़ गई है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

फिर ....?
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
क्या फिर से ईसा सोएगा ....?
धरती पर विप्लव आएगा
क्या ....?
हम आस लगा लें
तुम अठ्ठारवें
मनु बनकर आओगे ....?
या
हम अंतरिक्ष यान बनाकर
तुम तक स्वयं चलकर आयेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हम विश्व विजयी

हम विश्व विजयी हैं
हमसे टकराना
ठीक नहीं

हम दुश्मन को
मिटाते हैं
अपनी शक्ति बढ़ाते हैं
हम वह हस्ती हैं
जिससे आग बरसती है
हम विश्व विजयी ....

हम धरम मार्ग पर चलते हैं
विज्ञान से नाता रखते हैं
हम सागर छान के लाते हैं
नभ में जाकर मँडराते हैं
हर क्षेत्र में हैं
हम धुरंधर
हममें अद्भुत शक्ति है
हम विश्व विजयी ....

हम सदा सत् पर मरते हैं
हिंसा से दूर ही रहते हैं
हम उन्नत पथ अपनाते हैं
सुकर्म सदा फैलाते हैं
वसुधैव कुटुंबकम् में
हम सबकी आसक्ति है
हम विश्व विजयी ....

हम गोला बम
न चलाते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हर राही को गले लगाते हैं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हम देश-प्रेम के मस्ताने
अपनी मस्ती में रहते हैं
हम स्वर्ग न माँगा करते हैं
धरती को स्वर्ग बनाते हैं
हम अपने देश धरम पर
सौ बार मरे
सौ बार जिए
करते हरदम बंदगी हैं
हम विश्व विजयी ....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या कहती हो

अरे, क्या हुआ
बोलो तो-
हाँफ क्यों रही हो?
आख़िर देखा क्या है?
काँप क्यों रही हो ....?

उसने कुछ नहीं कहा
चुपचाप
कान पकड़े ही रही
बोलो, एक बार-
तो बोलो
मेरी कसम
वरना राज
मर जायेगा
फिर आने वाला
कल पछतायेगा
उसने हिम्मत की धीरे से
बोली- सुनाऊँ?
हाँ, हाँ ....

तुमने जो
जमीन पर पेड़ उगाया था
वो ज़मीन पेड़ को कुतर-कुतर कर
खा रही थी

क्या कहती हो ....?
अभी तो मैंने
शुरू किया है कहना
तुम केवल सुनती जा ....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमने जो जल दिया था
ज़मीन को सींचने के लिए
वह? जल को क्या हुआ?
जल को कुछ
नहीं हुआ
जल पीने वालों को पूछिए ....
जल ज़हरीला हो गया है
घृणा और द्वेष के केमिकल से
हाथ मिला कर
अपनी ताकत दिखा रहा है
तुमने जो एक बेटी
पैदा की थी
जगत जनाने
और बसाने के लिए
वह ....?
वह
अब जगत जनाने की जगह
जगत डुबाने जा रही है
क्योंकि वह
अब बेटी बनकर नहीं
जीना चाहती है।
आजकल
वह बेटा बनती जा रही है
नहीं, नहीं ....
अब आगे
मैं कुछ नहीं सुन सकती
पर एक बात
बताओ .... मैं कैसे मान लूँ
कि तुम जो कह रही हो
सच कह रही हो
वह परछाई थपोरी
बजाकर हँसने लगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भला कोई अपने से
झूठ बोलता है ....?

दिल पर हाथ रखकर कहो-
क्या तुम
थक नहीं गई हो?
इस बढ़ते-उगते
पनपते हर किस्म के
हर रंग के पाप को ढोते-ढोते ....

आइने की परछाई
उदास हो गई
तुम सच कह रही हो
आदमी अपने से झूठ नहीं बोल सकता
और यही कारण है कि
अब मैं
और अधिक
यहाँ नहीं रुक सकती
मैं जा रही हूँ ....
मैं जा रही हूँ ....
सागर की गोद में
अपने आँचल पर लगे दाग छुडाने

अब आइने से
बाहर की
परछाई भी उदास हो गई
क्या ....?
क्या कहती हो ....?
तुम जा रही हो ....?
मतलब-
जल प्लावन आयेगा ....?

CC0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कली

तुमसे मिलने से पहले मालूम न था
ज़िन्दगी इतनी खूबसूरत होती है क्या?
तुम आए तो आँगन में आयी बहार
रीते मन में भी नन्हा चमन खिल गया
मैंने किस्सा सुना था
फरिश्तों का बहुत तुझे देखकर
मुझको वैसा ही लगा था-
तेरे खिलने की आहट से चल पड़ी थी
मेरी ज़िन्दगी
लेकिन ....
एक तूफ़ान आ गया
और चमन हिल गया
वो तुझे ले गया
और मैं बैठी रही
तू कली थी
मेरी ज़िन्दगी की
तुम खिली हो कहाँ
मैं नहीं जानती
पर ....
जब तक लौट कर
तुम न आओगी
मुझ तक
मैं ज़िन्दा रहूँगी
मैं ये जानती हूँ।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काश ....!

काश
अगर पता होता ....।
काश! आज का चित्र
मैंने कल ही खींच लिया होता
गर मुझे पता होता
कि मेरी निष्कंटक राहों में
कल काँटे बोए जाएँगे
फिर तो
उगती धरती को बंजर
बना दिया होता
गर मुझे पता होता
कि मेरी मेहनत की मजदूरी को
कल गिरवी रखा जायेगा
फिर तो-
मैं ही इसको
बेच के खाया होता
गर मुझे पता होता कि
माँ के माथे की बिंदिया
कल बाजारों में बिक जाएगी
फिर तो
अपने इन हाथों से
खुद माँ को
विधवा बना दिया होता ....।
काश ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसी क्रूर क्रूरता

ऐसी क्रूर क्रूरता
कि क्रूरता लजाई है
सभ्यता की आड़ में
मानवता बिकाई है।
पाताल छुपना चाहता है
आकाश उड़ना चाहता है
देखो.... देखो
अवनि की आँख भर आयी है।

चाँद कहता-
चाँदनी को लेकर चला जाऊँगा
रवि कहता-
रोशनी से जग को जलाऊँगा
नदी कहती-
बाँध को तो खुद ही बहाऊँगी
कहती वसुन्धरा-
मैं अन्न उपजाँऊ ना
नर-भक्षी जनता को
काहे को जीलाँऊ मैं!

आओ अभी वक्त है
चाहे तो सँभल जाओ
रूठी हुई नियति को
हाथ जोड़ मनाओ सब
नहीं तो सागर में बहने को
बाँध लो सामान अब।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानव आँसू पर इतराता है

मानव
आँसू पर इतराता है
रो-रो कर सबको दिखलाता है
बिलखा है जब
अम्बर अपना
तब वह हर्ष मनाता है।

पुलकित होता है
देख उन्हें
जिस पर वारिद
टूटा है।

जब पतझड़ से मिलते हैं
बंजर धरती पर चलते हैं
जब नदिया प्यासे मरती हैं
तब तू क्यों नहीं पिघलता हैं ?
मानव ....?

ज़ब फूल लुटाए जाते हैं
मधु से अलगाए जाते हैं
जब सौरभ के
सूखे होठों पर
काली परतें बिछती हैं
तब तू क्यों नहीं अकुलाता है ?
मानव ....?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. इंदु पांडेय

जन्म : 22 जनवरी

स्थान : बेटाबर कला, गाजीपुर (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., पी-एच.डी.

मातृभाषा : हिन्दी

प्रकाशित रचनाएँ : ➡ महाकवि कालिदास एवं सूरदास के काव्य में प्रेमतत्व की अभिव्यक्ति (शोध-प्रबन्ध, 2008) ➡ संन्यासी का अपहरण (कहानी-संग्रह, 2009) ➡ हिन्दुस्तान की गली में लंदन (कहानी-संग्रह, 2009) ➡ मोम के मर्द (कहानी-संग्रह, 2010) ➡ आज़ाद हिन्दुस्तान में क़ैद हूँ (कविता-संग्रह, 2010)

आगामी कृतियाँ : ➡ अर्थ पिशाच (लघु उपन्यास) ➡ मुर्दे की पीठ पर (लघु उपन्यास) ➡ स्वर्ग से तबादला (हिन्दी एकांकी)

अन्य उपलब्धियाँ : आकाशवाणी पुणे, मुम्बई, बनारस से समयानुसार कविता कहानी, नाटक, वार्त्ता, समीक्षा आदि जैसे लेखन एवं प्रसारण कार्यों में सहयोग।

सम्प्रति : हिन्दी विभागाध्यक्ष, जय हिन्द कनिष्ठ महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे-412101 (महाराष्ट्र)

फोन : 09271231123

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

parag books

Rs. 120.00

ISBN : 81-87771-41-0

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant